

१४३ आनन्द मन्त्रा महाभाषास्तोत्र

आनन्द मन्त्रा
ADNA ARCHIVES

3080

रु निमरु निक्का ध क लि का त वा द्वा या दृष्टिः शि शि न मू य चानं त व य नि ॥ ३५ ॥ ॥ ॥
 शा विद्या न रु स्य ॥ ॥ त वा का न मू ले स रु स म य या ला स्य य त या न द्वा मा न व
 न व त स म हा ना द द न टं । उ रु ला स्या म ता स्या मू रु य म यि नी र्द श्च द य या म ना था ली
 रू अ न के अ न नि म र्ज ग दि र्द ॥ ५० ॥ मू ल शी रु वा क्ता नः ॥ श्री का ॥ ॥ यान द र्द
 स य द्वा ॥ ॥ रु म रु स र्व द ॥ ॥ ॥ श्री आ मु स र्व त ॥ ॥ मा य गि ल रु क्क न व म र्गि
 ॥ श्री आ दि त वा स र्ग ॥ ॥ रु क्क या या श ना ॥ शि द्वि ता उ रु ला स न वा या श ना ॥
 रु म रु स र्व द ॥ ॥

श्रीविद्या नरुस्य ॥ ॥ तकाका नमूले सरुसमय या लास्य यत्र या नदा न्मा नैव

नवप्रसमहाताददभट। उरुत्यामतात्यामूरुयमयितीर्दध्यदययामनाथात्ती

ॐ अनकं अननिमर्जगदिदं ॥ ५० ॥ मूलमं रुवाकानं ॥ श्रीका ॥ ॐ यानयति

संयुक्तः ॥ हरमस्तु सर्वदा ॥ ॥ आमुसर्वत ॥ ॥ माद्य गिल कृष्ण वसति

(॥ अ. जा. दि. त. वा. स. त. थ. क. क. या. या. श. ना. ॥) जि. द्वि. त. अ. ल. त. स. न. वा. या. श. ना. ॥

ॐ नमः सर्वदा ॥९॥

[illegible]

गमनार्थं कारविग्रहवस्तु दिव्यरूपनयसक। कलित्याय नमामा नाना ज्ञेयं

अथ कलाधिके ॥ अदिथि ० समुद्र नयश्च स ॥ ० माह न विद्वि कयल स

का (गमू नना जी युवा वनी । विमर्शने समुद्र न वागु देव नमः ॥ ६ ॥ का ना प्र वा

लाभ प्रेम्... विन्दुः... आत्मानन्दविमलदिनी।

उत्तमानाथकृष्णकेयवमश्वना००॥ श्वनाकश्वनामागु० श्वनाकश्वनामागु०
रघुश्वनाकश्वनामागु० श्वनाकश्वनामागु० श्वनाकश्वनामागु० श्वनाकश्वनामागु०

८५६ ददवागयागायाव व म्कगरादुमनारमावि

(ग। आवर्तवनि तावर्त लयविश्रामका विद्या। मंगला लं मरा (मोत्री विनया
गिनिका मय वक। माया लं उ नवी गकि 8 नाय कायी 0 धय मका ली लं यवडा
डि न्या अर्द्धयी (0 स्वयं स्त्री। लं ययी (0 पुयी (0 वृ लमाद्या कम महु ल ॥ य अय
नवम धमक यक्षु यक लमातनी। मारु यक किता दवी प्रद्या गिनी यनी वता।
लं चमछा किनी माया अय मया निरजसा। किं किणी जा प्रथा वानी दीना जत
रु द्दु डि 8। शिक्षा मधम संधु शिक्षा गत सम गृण ॥ विद्य का नम न साक

मारु मनु ननु विथ ॥ उं का न सनमा नूट विरु द्यय शिक्षा गत ॥ डी कानी ऊ ननी
दवी काँ काँ काँ का नरु दिनी ॥ वा य। की या य की दवी यौ नौ लौ काँ निवासिनी। रु मरु
मावता दवी हंसिनी रु सम (ध) (ग। हं स नाद श्वनी ती मवडा द रु अ (ध) मरु। गुरु (गवि
मल मात पु मउ ल्ला नव लुड। वक्ष रु य स्व रु य व रं डी ही सम या वत ॥ डी कान मिउ
नावर्ति डी डी मनु ननु विथ। माया नू मध। गी दवी गऊ डि कं न ऊ श्वनी लमेव दि यू
हि का य डी डी डू उ म डु व स्य य ॥ रु व डु क उ वा ति न उ र्थ मरु र्थ व र्द नी व सा न य द

नारद उवाच ॥ यद्वा गतं स कर्मभञ्जनी ॥ सुकृतं च सुकृतं सुकृतं सुकृतं सुकृतं सुकृतं ॥ शान्तं
यत्नितं नन्द उवाच ॥ नो कर्मभञ्जनी ॥ सुकृतं नवाधिर्वीवाक्कीर्णं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं
वल्लकलं नोडी सुकृतं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं कावलं नवाधिर्वीवाक्कीर्णं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं
यात्वं सर्वं सिद्धं नोडी सुकृतं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं कावलं नवाधिर्वीवाक्कीर्णं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं
तामयमरायां ॥ मय उवाच ॥ नोडी सुकृतं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं कावलं नवाधिर्वीवाक्कीर्णं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं
सर्वं गतं सुकृतं नोडी सुकृतं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं कावलं नवाधिर्वीवाक्कीर्णं कावलं सर्वं सुकृतं ॥ सुकृतं

[illegible]

[illegible][illegible]

ॐ नमः ॥ ॥

वयः थोरदिनेयदिन. मिथ्याभावादिनाथ. समतिमसमता. धूर्जटकान्तशुन्यं ॥ कनकाभा ॥
 अ॥ ५ ॥ नाशकसमाकर्मवितियदगमन. यद्यव्यथोक्तादि. ज्ञेयताकथंभ्य. द्विजकुलवि
 हि. वक्रमा. ज्ञेयसमात्र. यागाधर्मविवर्तल. शननमनस्तथा. नादिगोदिव्यकीकि ॥ कनकाभा
 भञ्ज ॥ ६ ॥ स्वावाययुक्कास. न्ययविवीवि. माहितगमगताय. पूजाग. ध्यानाकदावि. वरु
 गत्रगेरुन. स्वधुविविवायलानि. नागालियममाला. जिनसिक्किमिगा. गंधयुथोक्तदथ.
 ॥ कनकाभा ॥ ७ ॥ दुर्वेमधालियुक्त. घातसगनिहिता. स्नायितनेवलिग. भालिके. अदना
 यै. ४ कनकविनचितेयुजितनसनेरि. यै. ४ कयुत्रयुक्त. विविधनसयुतनेवर. दा. यदा
 यै. ॥ कनकाभा ॥ ८ ॥ सिक्खास्नानसत्राज. येनवेमयमनूक्त. सिक्के. ध्यानामा. ज्ञे.

स्नानसा. कयलिन. युक्तगितगुरुन. आतिनययनारव्य. लिगारुवक्रवाक. सकल
 नेनदृष्टकदाचित् ॥ कनकाभा ॥ ९ ॥ ना. ग्मानि. ४ सर्गशुद्ध. सिग्गु. विलहिन. धरुमा
 लाथकात्र. नासा. गुन्यसुदृष्टि. निहितरुवगुणी. नेनदृष्टकदाचित्. उमन्यावसु
 यावा. विहितकत्रीमन. शंकरननसमनामि ॥ कनकाभा ॥ १० ॥ ध्यानेचिक्किगिवाख्य
 युवुत्रगधनन. नेनदृष्टद्विजथा. हातयै. नदसंख्य. दूतवेदवदन. नायिगेविजम
 के. ४ नाथा. श्रीगीगतित्र. वगतननियम. दुक्का. यथैव ॥ कनकाभा ॥ ११ ॥ चथा
 कामित. शंख. वरुगंगध. वशकन. सथे. वृखीनकणुक. विमननगा. सुवेखा
 नन. दकि. वक्रगे. सुदनासमनसवनधन. मला. यसा. नाहन. मा. दार्थ. कन. वि.

सि (धर्म) (धसूत्र विटयवाटीवनी वृत्तमलि द्वीयनि याव वन वति चिन्तामाली
 गृह। गिवाकात्रम। श्रयत्रमगिवयर्थं द्वनिलयां रुद्रनिलीधन्याः कतिव
 नचिदानन्दलहली ॥ ७ ॥ ययश्चक्यग ॥ ॥ मदीमूलायात्रकमयिमलियूत्र
 दूतवर्द्धमिगंखापिस्त्रानं द्वदिमद्रुतमाकासमयनिमनायिदूम (धसकलमवि
 जित्वा कृतयथं सहसात्रयय सहस्रसि यत्वा विदु नसि ॥ ८ ॥ ययुर्क ॥ ॥ सुधा
 धासात्रेश्वरनेयुगनाकविगलिर्गः ययश्चसि वनीदूननयिप्रसा मायम

रुसा। श्रवा यै र्वा रू मि रु ज ग रि रु म धू व ल ये स्व मा त्मा न कृ त्वा ख वि वि कू ल
कू लु कू रु नि नि ॥ १० ॥ कू लु नि नी ॥ ॥ उ रु रि ः शी क (रु) ः शिव यू व नि रि ः य ः
रि न धः य रि न्ना रि ः शं र्वा न व रि न वि मू ल यु कि नि रि ः य य ः श्वा रि ः शिव रू द ल
क ला म सि व ल य सि न्ना रि ः सार्द्ध त व रु व न का णाः य रि ण ग ॥ ११ ॥ शी व क ॥
॥ ॥ व दि य र्म द र्म उ रि न गि नि क न्द गु ल यि रुं क वी न्द्राः क ल्प न्क क थ म वि
वि नि श्चि य रु त यः य दा ला का न्द्रा द म न ल ल ना या नि म न सा तथा मि द्दः य

याम यि गि नि य सा यू ज य द वीः ॥ १२ ॥ अ नि र्वा या ॥ न र व र्वा र्मा र्म न य न वि र्म
न र्म सू ज द न वा र्मा ग ला क य ति त म न्द्रा व नि ग त ग ॥ ग ल द्वा र्वा कू व क ल
वि मु क्त सि व या रु ण नु द्वा का ः वि ग लि त दू कू ला यू व त य ॥ १३ ॥ ज ग
रि नि ॥ ॥ कि णा व र्म वा स दि ग म वि क र्म वा ग द न क दू ता (ग द्वा व वि श्व रु न वि
क र्म वा ग द नि न दि वि दि ः व रि ण न न सि व य उः व वि रि ति य म य र्वा र्म वा
म य्म य रि न व या र्मा वू ज यू र्मा ॥ १४ ॥ व द न्व य र्मा रु वा ॥ ॥ स र र्वा र्मा शु ज ग

शिशुनजडाडमूकुटीव नगसगामूठिकगुठिकायूसुकककरीसुकनली
नलाकथमविसर्गसन्निदधनमधुकिप्रदाकासधुनिमधुनीधारुधितय॥१५॥
॥समया॥ ॥कवीद्राणांयतःकमलवनवालातयनूविंरुजनैषसक्तःकमिवि
दन्नामवरुवगी।विनिष्क्रियस्यासुलतनरष्ट्रज्ञानलहलीगरिगारिर्विनि
विदधमिसर्गनजनममि॥१६॥साप्रखन॥ ॥सविशरिर्वीर्वागिलालंगरूवि
रिर्वीगिन्याद्वारिर्त्वासरुजननिसुधिनयति॥सुकर्णकाद्यानीरुवमिमह

गंरुगिगुलागर्वचारिर्वीव्यवीवदनकमलामादमधुने॥१७॥ ॥प्रदध्या॥
रिभक्तननतनलीशीप्रतिरिर्दिर्वसर्वमूर्वीमनूनिनिमर्गसप्रति॥
रुवन्नायप्रस्यर्वनरुमिदशालीननयनाःसहार्वश्यावश्याःकमिनकाति
गीर्वीलगतिकाः॥१८॥काम्यसि॥ ॥मुखविन्दुकलायुचयुगमधसुस्यत
दध्यासुकागार्धध्यायकुद्रमहिषितममथकलासिदधःमंकीरुनयतिवनि
तामिहिलयुगिलीकीमद्यागुरुमयतिनविन्दुसुनयुगं॥१९॥कामकला॥

[illegible]

वा निवृत्तिमिति यः तदेव त्वं न भूषिषि सि नि असा य ऊ यदवीन् कू च व फ न्द सु
 ट मू कू टनी रा अति त य दा २ ॥ २२ ॥ अ ग द म्वा ॥ ॥ ख या द्वा वा वा म न य न य त्रि र
 क न म न सा गी ती रा द्वा गी रा ज य न म यि ग क द्वा त म रू ॥ त य न ल्हा क र य स क
 न म न्द म रू णि न य न कू या ख्या मा न म् कू टिल ग नि रू दाल म् कू ट ॥ २३ ॥ य रा ॥ ॥
 अ ग न्मू गे का ता रु त्रि न वा त न्द क य य न ति न सु र्ति न ल्हा म यि व द्वा गी ग सि न य ति ।
 स दा पूर्वः सर्वे न वि द म न्गु द्वा नि व शि व ल्हा द्वा ल्हा मा न म्वा द्वा य त्रि न था क

लुगि कया ॥ २५ ॥ यश्च कृत्वा ॥ ॥ अथानंदवार्ता ॥ त्रिगुणजनितानामपि त्रिविधं
वैकुण्ठाय जातवन्तं नारायणं विप्रं विना। गथादि लेख्यादादहनमभियं ० स्यनिकटं
मिना कर्तुं सञ्च नू कलित कथान्क समूह ॥ २५ ॥ त्रिविधा ॥ ॥ विप्रिश्नीः यश्च
लव अगिह त्रिनाशानि विप्रति विनाशकिना भवजगिधनदायातिनिधनं विनकुमारु
द्यो विगतिप्रयिसमीलितदृष्टा महसं हा प्रसिद्धागि विहं लसतिलव्यगि प्रसा ॥ २५ ॥
ॐ कृष्णक ॥ ॥ अथो अर्थगित्यं सकलमपि मूडा विप्रचनं गतिः प्रादादि अकम

हमदनाद्याह निविधि यत्नमः संवर्गः सुखमखिलमाचार्य ददग्न सयर्था यथा
यस्य वरुव पुयभ विलसित ॥ २५ ॥ समया कर्तव्यं ॥ ॥ सुखमप्यासाद्य युति
रय अश्च स मरुतु गला च यद्य कवि (अविधि गमखाद्यादि विषदः। कला
लं यत्क दं कवलितवतः कालं कलना नगं शसु नूलं गवज ननि न ताटं कमहि
मा ॥ २६ ॥ ॥ किनाटं वनि अयतिह तः पूतः केटरुदः क (अत्र काटी प्रसवतसि
अदि अं डी लालि मूकटं। प्रगम्य कर्तव्यं सूरुय मयातस्य रुव नं ह नस्य सुम्हा।

ननयव निजर्नक्ति विजयते ॥ २६ ॥ ॥ यदुःखं व्याप्यः सकलमयि सीते यदुवनं मि
नरुः कुरु सिद्धि यमवयवतनुः यशुपतिः यत्नस्तु निर्वन्नादखिलयुक्ताथैकवट
तास्तु नुनतणं किति प्रथमं विंगलप्रवागीननदिदं ॥ ३० ॥ सर्वो गमः ॥ ॥ गिवः ग
रु कामदिगिनयनवि। गानकि प्रहः स्मर्तुं सः गक्रुद नूयनामा प्रह प्रयः।
प्रमिदस्त्रिखाहिरुहुरिज० साने वृद्धतिना रुद्रं कं वष्पुस्तु नव प्रननिनामव
यवर्ता ॥ ३१ ॥ गायाम्द्रा ॥ ॥ स्मर्था निर्लक्ष्मीरुनयमादौ नवमनार्त्ता अर्थक

[illegible]

यथा विवर्तन्ता कारं शिवय ॥ आवन विम्व ॥ ३४ ॥ वृयश्च मि का ॥ ॥ नवा
 क्ला वक्रमं गयन गगिकाठि द्यनि धनं यनं गिगु वद यनि मिलि गयार्ध ॥ निवी दा
 यमाना दूष्का न विगगिगु यी नाम विषय निना ला कला के निवस निहिल ला
 करुवने ॥ ३५ ॥ आकाय नाया साद ॥ ॥ विगु ॥ दोत ॥ दुद ॥ सुठि क विगदं द्या मजन
 वां ॥ गिर्व ॥ गदव वी मयि गिवसमान वसिर्न ॥ यथाः का ह्या या ह्या गि विन गसा
 रय ग नं लिं विधूता कक्षा का विलसति यका नी वज गणी ॥ ३६ ॥ यना ॥ ॥ समू नील

संविक्कमलमकार्थकप्रसिक्कं ॥ अहं सर्वं दूदं किमपि महतामानं वनं ॥ ३५ ॥
यावद्व्यदशशुद्धितविद्यायविनातीर्यदादत्तदावाहुतामखिलमद्वयः ॥ ययव्व
॥ ३६ ॥ ॥ अहं न शक्ते ॥ ॥ तदिदं न शक्ते ॥ ॥ तदिदं न शक्ते ॥ ॥ तदिदं न शक्ते ॥ ॥
नलपयत्रिनद्वन्द्ववयूषी ॥ तव श्मममं यीकुमपिमलियूषी ॥ कशत्रननिषवववर्नद
नमिहि न तर्कं हि नुदने ॥ ३७ ॥ ॥ अद्या ॥ ॥ तव मत्वा विष्णुतद्वतवरुमभिषाय
नियतं तमीदं सर्वं न ॥ ३८ ॥ ॥ अहं ति नाश्च संसर्ग ॥ यदा लोके लोकात् दहति म